स्वाध्याय अध्ययन-सत्रों के लिए चिह्न

स्वामी अखण्डानन्द द्वारा लिखित व्याख्या

सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर स्वाध्याय अध्ययन-सत्रों के पृष्ठों को सुशोभित कर रहा एक सुन्दर व महत्त्वपूर्ण चिह्न है जो हमारे अध्ययन में महान अर्थ रखता है। आपने स्वाध्याय अर्थात् आत्मा के अध्ययन के सभी पहलुओं के विषय में सीखने में अत्यधिक रुचि दर्शाई, अतः मैं आपको इस चिह्न के बारे में और भी बताना चाहूँगा—और इस प्रकार आपको अपने अध्ययन के एक भाग के रूप में एक और रत्न प्रदान करूँगा जिसका आप परीक्षण कर सकते हैं।

स्वाध्याय अध्ययन-सत्रों का चिह्न गुरुमाई चिद्विलासानन्द से प्राप्त सिखावनियों, निर्देशों व विवरणों के आधार पर बनाया गया है, जब उन्होंने पहली बार कहा था कि ये अध्ययन-सत्र आयोजित हों।

इस चिह्न की पृष्ठभूमि में हरे, नारंगी और लाल रगों की छटाएँ हैं। ये रंग आम के फल के बदलते रंगों की याद दिलाते हैं जब वह समय के साथ परिपक्व होता जाता है, कच्चे आम के हरे रंग से लेकर जब वह परिपक्व होकर लाल-नारंगी रंग का होता है।

भारत की दार्शनिक व शास्त्रीय परम्पराओं में, लाल रंग ज्ञान से जुड़ा है, और नारंगी [विशेषकर, केसरिया नारंगी] शुद्धता का प्रतीक है क्योंकि यह अग्नि का रंग है जो कि अशुद्धियों को जला देती है। इसके साथ, हरा रंग नैसर्गिक जगत का आवाहन करता है और उससे जुड़े गुणों का भी—शान्ति, सुख और सामंजस्य। पश्चिमी विचारधाराओं में हरे रंग के विषय में ऐसी ही मान्यताएँ हैं और यह प्रज्ञान को भी दर्शाता है। ऐसा माना जाता है कि नारंगी रंग मानसिक क्रिया और रचनात्मकता को प्रेरित करता है और लाल रंग ऊर्जा, बल, शक्ति और दृढ़निश्चय का रंग है।

स्वाध्याय चिह्न का मुख्य पहलू है, एक वृक्ष। वृक्ष जीवन को दर्शाते हैं। उनसे इस पृथ्वी पर जीवों को महत्त्वपूर्ण लाभ मिलते हैं, इसलिए उन्हें मूल्यवान समझा जाता है—जैसे कि ऑक्सिजन, अन्न, भरण-पोषण, उपकरण, सौन्दर्य, आश्रय और संरक्षण। वृक्षों की छाल और जड़ों में, तथा पत्तों व फलों में अनेक औषधीय व आरोग्यकारी गुण होते हैं। वृक्षों के सान्निध्य में रहने मात्र से पोषण व प्रशान्ति मिलती है।

प्राचीन काल से ही भारत में तथा अनेक संस्कृतियों में वृक्षों को पावन विभूतियों के रूप में सम्मानित किया गया है। ऋग्वेद में उन्हें 'वनस्पति' अर्थात् वन के स्वामी कहा गया है, वे स्वतः ही पुनर्जीवित होते हैं, वे शाश्वत हैं और देवों के निवास-स्थान हैं।[१]

वृक्षों को ज्ञान का भण्डार कहा जाता है; कई कहानियाँ और दन्तकथाएँ हैं जो यह दर्शाती हैं कि वृक्ष अनेक सद्‌गुणों के मूर्तरूप हैं, जैसे सहनशीलता, दृढ़ता और निःस्वार्थ उदारता। प्रायः ऐसा माना जाता है कि वे स्वयं ऋषि-मुनि हैं और वे उन सभी को प्रज्ञान प्रदान करते हैं व वरदान देते हैं जो उनकी छत्रछाया में बैठते हैं।

वृक्षों में यह अन्तर्जात क्षमता होती है कि उनके साथ चाहे कुछ भी घटित हो, वे पुनः स्वस्थ होकर अपनी पूर्वस्थिति में आ सकते हैं और नवजीवन के साथ पुनः जी सकते हैं। अत्यधिक विध्वंसक दावानल के बाद भी वृक्ष फिर से उपजेंगे, अपने आपको और अपने आस-पास के पर्यावरण को पुनर्जीवित करेंगे। वे हमें सिखाते हैं कि परिस्थिति चाहे जैसी भी हो, हमारे अन्दर की प्राणशक्ति ऊपर की दिशा में, ऊर्ध्वदिशा में उठने के लिए सदैव तत्पर होती है—वह विकसित होने, फलने-फूलने और समस्त जीवों का पोषण करने में सहायता करने के लिए सदैव तत्पर रहती है।

पीपल के वृक्ष का महत्त्व

स्वाध्याय अध्ययन-सत्रों के चिह्न में जो वृक्ष दर्शाया गया है, वह पीपल का वृक्ष है। इसका जामुनी रंग गहरे ध्यान और आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति से जुड़ा है।

युगों से भारत में, अनगिनत ऋषि-मुनियों व सन्तजनों ने पीपल के वृक्ष के नीचे ध्यान कर आत्म-साक्षात्कार प्राप्त किया है। इसलिए इसे 'बोधीवृक्ष' भी कहा जाता है, बोध का वृक्ष अथवा ज्ञानप्रदाता वृक्ष।

अनेक भारतीय शास्त्रों में इसे 'अश्वत्थ वृक्ष' कहा जाता है। ऋषि-मुनियों के अनुसार इसकी जड़ें ब्रह्मा हैं, इसके पत्ते भगवान शिव हैं और इसका तना भगवान विष्णु हैं। श्रीमद्‌भगवद्‌गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं, "वृक्षों में मैं अश्वत्थ हूँ।"

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता में आगे भगवान श्रीकृष्ण संसार के स्वरूप को समझाने हेतु, अधोमुखी पीपलवृक्ष की छवि प्रदान करते हैं जिसकी जड़ें ऊर्ध्वदिशा में होती हैं और शाखाएँ अधोदिशा में बढ़ती हैं। जड़ें परमा आत्मा अर्थात् परम चिति के धाम से पोषण प्राप्त करती हैं। इसकी शाखाओं पर उगने वाले पत्ते और फल इस पृथ्वी की जीवयोनियाँ अर्थात् जीवात्माएँ हैं। जैसे-जैसे ये जीवात्माएँ सांसारिक क्रियाकलाप में उलझती जाती हैं, वैसे-वैसे वे अपने स्रोत से अधिकाधिक दूर होती जाती हैं। इसी कारण भगवान हमसे कहते हैं कि हम सदैव वैराग्य का अभ्यास करते रहें; हम ज्ञान के स्रोत में दृढ़ता से प्रतिष्ठित रहते हुए साधना में निरन्तर प्रगति कर सकते हैं।

स्वाध्याय चिह्न में जो वृक्ष है, उसका आधार चौड़ा है और कटोरे या पात्र के आकार का है जो यह दर्शाता है कि हम जीवन में एक स्थिर आध्यात्मिक मुद्रा को धारण करें। इसका मज़बूत तना

ऊर्ध्वदिशा की गतिशीलता व विकास का सूचक है। जैसे-जैसे वृक्ष प्रकाश की ओर निरन्तर बढ़ता जाता है, वह पृथ्वी के जीवनदायी आधार में दृढ़ता से जमा रहता है।

हृदय के आकार के इसके पत्तों और तोरण के आकार की इसकी शाखाओं से यह प्रतीत होता है कि यह सदैव आनन्द व उल्लास में रहता है। इसके पत्ते विशेषरूप से प्रतीकात्मक हैं। ऐसा कभी नहीं होता कि पीपल के वृक्ष के सभी पत्ते एक ही समय पर झड़ें—जब पुराने पत्ते झड़कर नीचे गिरने लगते हैं तो उनके स्थान पर नई कोंपलें उगने लगती हैं, इस प्रकार यह वृक्ष सदैव हराभरा बना रहता है। अतः पीपल के वृक्ष को अमर माना जाता है।

प्राचीन समय से ही, भारत में लेखकों व चित्रकारों ने पीपल के पत्तों का अनेक प्रकार से उपयोग किया है व उनसे प्रेरणा पाई है। काग़ज़ का आविष्कार होने से पहले, इन पत्तों को सुखाकर उनका उपयोग लेखन अथवा चित्रकारी के लिए किया जाता था। आज भी, पीपल के पत्ते पर की गई पेन्टिंग को एक उच्चस्तरीय, बहुमूल्य कला माना जाता है। चित्रकार इन पत्तों का उपयोग छोटे कैन्वस के रूप में करते हैं और बारीकी से उस पर, देवी-देवताओं, लोगों, पशुओं और निसर्ग के चित्र बनाते हैं। ये कलाकृतियाँ अत्यन्त मूल्यवान होती हैं क्योंकि इनकी रचना करने के लिए अत्यधिक धैर्य व कौशल की आवश्यकता होती है, और इसलिए भी कि पत्तों पर की गई ऐसी चित्रकारी बहुत ही सुन्दर प्रतीत होती है।

स्वाध्याय अध्ययन-सत्रों का चिह्न साधना के स्वरूप को दर्शाने के लिए उद्‌बोधक है। यह हमें आन्तरिक गुणों की, दृढ़निश्चय की और एकाग्रता की याद दिलाता है जो कि आध्यात्मिक पथ पर प्रगति करने के लिए आवश्यक हैं। जब हम इसे देखें तो हम ऐसा समझ सकते हैं कि यह मूलाधार चक्र से सहस्त्रार तक होने वाला, कुण्डलिनी शक्ति का ऊर्ध्वगमन है। यह साधना की दिव्य यात्रा है, जागृति से आत्मज्ञान तक; और यही लक्ष्य है स्वध्याय का, आत्मा के अध्ययन का।

---

[१] ऋग्वेद, X.९७।

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।